CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDE

हिं
२६१

ज विकासमाला

गन्नाथ पुरी

साहित्य मण्डल प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास माला : ११५

जगन्नाथ पुरी

एक महान् तीर्थ का रोचक वृत्तांत

लेखक
यशपाल जैन

नं १३९६

सम्पादक
यशपाल जैन

पुस्तक भेंट के निमित्त

१९६०
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९६०
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
युगांतर प्रेस,
दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफ़ी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोल-चाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाब बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाठकों से

इस माला में आप भारत के कई तीर्थों का हाल पढ़ चुके हैं। हमारे देश में चार दिशाओं में चार बड़े तीर्थ हैं। वे 'चारों धाम' कहलाते हैं। उत्तर में बदरीनाथ, दक्षिण में रामेश्वर, पश्चिम में द्वारका और पूर्व में जगन्नाथ पुरी। इनमें से पहले तीन की यात्रा आप इस माला की पिछली किताबों में कर चुके हैं। इस पुस्तक में चौथे धाम की भी कर लीजिये।

जगन्नाथ पुरी उड़ीसा में है। इस तीर्थ की इतनी महिमा है कि देश के कोने-कोने से हर साल हजारों नर-नारी वहां जाते हैं। समुद्र के किनारे बसे होने के कारण उसकी शोभा निराली है।

आप इस पुस्तक को पढ़ें और दूसरों को भी पढ़वायें। उससे आपको और आपके मित्रों को बड़ा लाभ होगा।

—सम्पादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जगन्नाथ पुरी

: १ :

सुबोध को घूमने का बड़ा चाव है। साल में जब कभी मौका पाता है, समय निकालकर वह कोई-न-कोई लम्बी यात्रा कर आता है। इस बार उसने जगन्नाथ पुरी जाने का विचार किया। बाबा ने सुना तो बोले, "बेटा जगन्नाथ पुरी तो बहुत बड़ा तीरथ है। वहां जाने को हमारा भी काफी दिनों से मन हो रहा था। चलें ?"

बाबा बूढ़े हैं, पर सुबोध जानता है, वह उन आदमियों में से नहीं हैं, जो किसीपर बोझ बनें। उल्टे चार काम दूसरों के कर देते हैं। सो सुबोध ने कहा, "जरूर चलो, बाबा।"

इसके बाद चलने का दिन तय हुआ, रेल तय हुई और थोड़ी-बहुत जो तैयारियां होनी थीं, वे की गईं।

बाबा के साथ सुबोध हावड़ा स्टेशन से रवाना हुआ। वहां से पुरी को सीधी रेल जाती है। गाड़ी में बड़ी भीड़ थी। सुबोध का डिब्बा भी खचाखच भरा था। दो-चार को छोड़ सभी यात्री पुरी जा रहे थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाबा ने देखा कि जानेवालों में मदरासी हैं, मारवाड़ी हैं, पंजाबी हैं, गुजराती हैं, बंगाली हैं, मराठी हैं, बिहारी हैं, तो उन्हें बड़ा अचरज हुआ। उन्होंने सुबोध से कहा, "बेटा, सबके अलग-अलग धरम होते हैं, अलग-अलग देवी-देवता होते हैं, फिर यह क्या बात है कि इतने धरमों के लोग एक ही तीरथ करने जा रहे हैं ?"

सुबोध ने कहा, "बाबा, हमारे तीरथों की यही तो महिमा है। आपको याद होगा, पिछली बार जब हम रामेश्वर गये थे तब धरमशाला में हमारे बराबर के कमरे में काश्मीर के यात्री ठहरे थे। जरा सोचो, कहां रामेश्वर और कहां काश्मीर ! पर हमारे तीरथ दूरी नहीं जानते, न धरमों का फरक मानते हैं। फिर पुरी हमारे चार धामों में से एक है।"

बाबा कुछ कहनेवाले थे कि पास बैठा यात्री बोल पड़ा, "चार धाम कौन-से हैं जी ?"

सुबोध ने कहा, "पुराने लोग बड़े होशियार थे। वह चाहते थे कि हमारे देश का हर आदमी अपने देश को देखे, देश के लोगों को देखे, उन्हें जाने और प्यार करे। पर यह हो कैसे ? सो उन्होंने तीरथ बनाये। वे जानते थे कि हमारे देश में धरमवाले लोग हैं। तीरथ के नाम पर कहीं-से-कहीं पहुंच जायंगे। लोग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सारे देश में घूम लें, इसलिए उन्होंने चार छोरों पर चार बड़े तीरथ बनाये। उत्तर में बदरीनाथ, दक्षिण में रामेश्वर, पश्चिम में द्वारका और पूरब में जगन्नाथ पुरी।"

सामने की सीट पर बैठी एक महिला सारी बात बड़े ध्यान से सुन रही थी, बोली, "मेरे नाना चारों धाम कर आये थे, तभी वह कहा करते थे कि हमने सारा देश घूमा है।"

सुबोध ने कहा, "वह ठीक कहते थे। जो आदमी घर से निकलता है वह एक ही तीरथ नहीं करता, एक के साथ रास्ते के और भी बहुत-से तीरथ कर आता है।"

बातचीत करते हुए रात होगई तो लोग ऊंघने लगे और इधर-उधर सिर टिकाकर सो गये। घने अंधेरे को चीरती, शोर मचाती, रेल आगे बढ़ती रही।

: २ :

बड़े तड़के लोगों की आंख खुली तो देखते क्या हैं कि रेल किसी लम्बे पुल पर से गुजर रही है। सुबोध ने कहा, "उड़ीसा की सबसे बड़ी नदी महानदी का पुल हम पार कर रहे हैं।"

बाबा ने झट जेब में से एक पैसा निकाला और नदी में चढ़ा दिया। देखा-देखी और लोगों ने भी वैसा ही किया। पर कुछके पैसे पुल से टकराकर ऊपर ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रह गये। नदी का पाट काफ़ी चौड़ा था और उसकी धारा बड़ी तेज़ थी।

आगे गाड़ी को किसी बड़े स्टेशन पर रुकी देखकर बाबा ने पूछा, "इतना बड़ा यह कौन-सा स्टेशन है ?"

सुबोध ने कहा, "यह कटक है, बाबा। पहले उड़ीसा की राजधानी यहीं थी। अब भुवनेश्वर है।"

बाबा बोले, "भुवनेश्वर भी तो बड़ा तीरथ है ?"

सुबोध ने कहा, "हां, बाबा, वहां तो मंदिरों की भरमार है। इसीसे लोग उसे 'मंदिरों की नगरी' कहते हैं। वहां का सबसे बड़ा मंदिर लिंगराज का है।"

किसीने पूछा, "अब पुरी कितनी दूर रह गई है, भैया ?"

सुबोध ने कहा, "यहां से खुरदा-रोड स्टेशन है २९ मील। वहां से पुरी २८ मील रह जाती है। कोई ५७ मील समझो।"

बाबा के हाथ-मुंह धुलाते हुए सुबोध बोला, "बाबा, यहां से पुरी को बसें भी जाती हैं। हमारे पास रेल का टिकट न होता तो बस से चलते। सड़क के रास्ते पुरी कुल ५३ मील है।"

बाबा ने कहा, "कोई बात नहीं है। उधर से आते समय देखा जायगा।"

दिन का उजाला फैल गया। दोपहर को गाड़ी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरी स्टेशन पर पहुंची। रुकने से पहले ही जगन्नाथ के जयकारों से प्लेटफार्म गूंज उठा।

स्टेशन से शहर मीलभर है। सुबोध और बाबा ने एक तांगा किया और उसमें बैठकर वहां पहुंचे। उन्होंने पता लगा लिया था कि बस्ती में दूधवालों की धरम-शाला खुली और साफ़-सुथरी है। सीधे वहीं पहुंचे। भीड़ काफ़ी थी, फिर भी उन्हें एक कमरा मिल गया। सामान जमाते हुए सुबोध ने पूछा, "बाबा, नहाओगे कहां ?"

"क्यों ?" बाबा बोले, "नल पर नहा लेंगे। पास में कहीं कोई कुंआ हो तो वहां चले चलो।"

सुबोध खूब ज़ोर से हँस पड़ा। हँसी रुकी तो बोला, "बाबा, यहांपर एक बहुत बड़ा कुंआ है, बहुत बड़ा—इतना बड़ा कि आप सोच भी नहीं सकते !"

बाबा ठहरे भोले-भाले। सुबोध की बात सुनकर उन्होंने कहा, "ऐसा कितना बड़ा कुंआ होगा, भैया !

सुबोध ने हँसते हुए कहा, "बाबा, वह इतना बड़ा है कि तुम उसका दूसरा किनारा नहीं देख सकते। उसमें बहुत पानी है, बड़ी-बड़ी लहरें उठती है।"

अब तो बाबा भी हँस पड़े। बोले, "मैं समझ गया। समुन्दर होगा, समुंदर।"

इसके बाद बाबा और पोते समुद्र में स्नान करने चले। बाजार में घूमते, बड़े मंदिर को दूर से देखते,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मीलभर का रास्ता तय करके वे समुद्र पर पहुंचे। किसीने बताया, इस स्थान को 'स्वर्गद्वार' कहते हैं।

समुद्र को देखकर बाबा की आंखें खुल गईं। इससे पहले भी वह रामेश्वर में समुद्र देख चुके थे; पर यहां के समुद्र की तो बात ही निराली थी। उसका बालू का किनारा दूर-दूर तक फैला था और किनारे-किनारे छोटी-बड़ी बहुत-सी इमारतें बनी थीं। वहींके एक आदमी ने कहा, "यह नगर दो भागों में बंटा हुआ है। एक तो शहर की बस्ती है, जिसके उत्तर में माटिया नदी बहती है, पच्छिम में परगना चौबीस कूद है, पूरब में परगना राहांग है और दक्खिन में यह समुद्र है। दूसरा भाग जिसपर हम खड़े है, बालूखण्ड कहलाता है। यह पूरब में चक्रतीरथ से शुरू होकर पच्छिम में यहां स्वर्गद्वार तक फैला हुआ है। यहां की अच्छी आबोहवा के कारण बहुत-से लोगों ने समुद्र के किनारे-किनारे अपने मकान बनवा लिये है। राजभवन भी इसी भाग में बना हुआ है।"

बहुत-से मर्द-औरतें-बच्चे समुद्र में स्नान कर रहे थे और लहरों का आनंद ले रहे थे।

इन दोनों ने भी स्नान किया। बाबा को पानी से कुछ डर लगता था। सुबोध उनका हाथ पकड़कर उनके मना करते-करते थोड़ा आगे ले गया। बाबा ने देखा, पानी काफ़ी दूर तक उथला था, पर लहरें इतनी तेज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थीं कि घुटने पानी में भी टिकने नहीं देती थीं। बाबा ने अंदर जाकर घर के लोगों के नाम ले-लेकर कई डुबकियां लगाईं और अच्छी तरह से नहा-धोकर खुशी-खुशी लौटे।

: ३ :

धरमशाला में लौटने पर वे अपने भीगे कपड़े सूखने डाल रहे थे कि एक पंडा आकर उनके पीछे पड़ गया। बोला, "मैं आपको यहांके सब मंदिर दिखा दूंगा और पूजा करा दूंगा।"

सुबोध उसे साथ लेने को तैयार नहीं था, लेकिन बाबा ने कहा, "ले भी लो, भैया। यह रहेगा तो मंदिर अच्छी तरह से देख लेंगे।"

थोड़ी देर बाद वे लोग सबसे पहले जगन्नाथजी का मंदिर देखने चले। पंडे ने कहा, "बाबाजी, जिनके मंदिर में हम जा रहे हैं। इनकी कहानी आपने सुनी है?"

बाबा बोले, "नहीं, तुम सुनाओ।"

पंडे ने कहा, "बाबा, बड़ी रोचक कहानी है। किसी जमाने में यहां पुरी में जंगल-ही-जंगल था। बीच में नीलाचल नाम का एक पहाड़ था। उसके ऊपर कल्पद्रुम था।"

बाबा ने पूछा, "महाराज, कल्पद्रुम क्या होता है?"

पंडा बोला, "एक पेड़ होता है। उससे जो मांगो, वही मिल जाता है। उस कल्पद्रुम के पच्छिम में रोहिणी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुंड था, जिसके किनारे विष्णु की मूरती थी। वह नीले रंग की थी। इससे उसे नीला-मधव कहते थे। एक बार

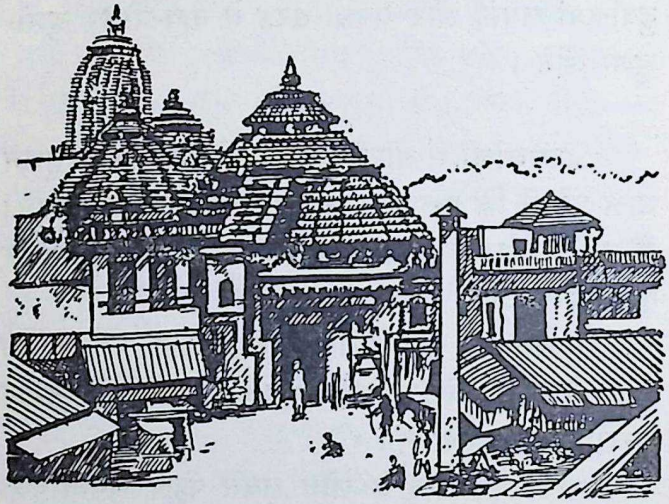

जगन्नाथ का मंदिर

सूर्यवंशी राजा इंद्रद्युम्न को उस मूरती की खबर मिली। यह राजा मालव प्रदेश के अवंती नामक नगर में राज्य करते थे। राजा ने उस मूरती की खोज में चारों ओर ब्राह्मण भेजे; लेकिन दैवयोग से किसीको भी उसका पता न लगा। उनमें एक ब्राह्मण था विद्यापति। वह पूरब को गया और तीन महीने तक बराबर चलता रहा। चलते-चलते वह शबरों के देश में पहुंचा। शबर वहां के मूल निवासी थे। भील समझो। वहां वह विश्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बसु नाम के एक भील के घर में ठहरा।

"वह भील रोज जंगल में जाया करता था और कुछ फूल और फल इकट्ठे करके चुपचाप कहीं चढ़ा आता था। एक दिन की बात कि उसकी लड़की ने कहा—अपने मेहमान को भी साथ ले जाओ। विश्व बसु ने इनकार कर दिया, लेकिन जब लड़की बहुत पीछे पड़ी तो वह इस शर्त्त पर राजी होगया कि ब्राह्मण की आंखों पर पट्टी बांधकर ले जायगा, जिससे वह वहां पहुंचकर भगवान के दर्शन तो करले, लेकिन उसे यह पता न लगे कि वह किस रास्ते आया है।

"पर ब्राह्मण बड़ा चतुर था। उसने एक थैली में अपने साथ सरसों ले ली और रास्ते का निशान करने के लिए उसे बिखेरता गया। नीलाचल पर पहुंचकर भील तो फल-फूल इकट्ठे करने चला गया, ब्राह्मण ने नील-माधव के दर्शन किये। उसी समय उसने देखा कि एक कौवा पेड़ पर से गिरा और सीधा स्वर्ग को चला गया। ब्राह्मण के मन में आया कि वह भी ऐसी ही गति प्राप्त करे। यह सोच जैसे ही उसने पेड़ पर चढ़ने की कोशिश की कि आकाशवाणी हुई, "ओ ब्राह्मण, तू यह क्या कर रहा है? अपने काम को भूल गया! जा, पहले अपने राजा को खबर दे कि तूने मूरती का पता लगा लिया है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"इसी बीच भील फल-फूल लेकर लौट आया। पर जब उसने उन्हें चढ़ाया तो रोज की भांति भगवान ने उन्हें ग्रहण नहीं किया। भील बड़ी हैरानी में पड़ा। वह क्या करे! उसी समय उसने एक आवाज सुनी—मैं तुम्हारे फल-फूल खाते-खाते तंग आगया हूं। मुझे पके हुए चावल और मिठाई खिलाओ। आगे से अब मैं तुम्हें नीला-माधव के रूप में नहीं, बल्कि जगन्नाथ के रूप में दिखाई दूंगा।

"भील ने घर लौटकर ब्राह्मण को अपने घर में बहुत दिन तक कैदी बनाकर रक्खा, जिससे वह किसीको भेद न बता दे; लेकिन एक दिन जब उसकी लड़की ने बहुत कहा-सुना तो उसने जाने की छूट दे दी।

"यहां से ब्राह्मण अपने राजा के पास आया और उन्हें सारा हाल कह-सुनाया। राजा को बड़ी खुशी हुई और वह अपने साथ बहुत-से लोगों को लेकर बड़े अभिमान से नीलाचल की ओर चला। उसके अहंकार को देखकर भगवान को बड़ा क्रोध आया। उसी समय आकाशवाणी हुई—हे राजा, तू मेरा मंदिर तो बना देगा, पर उसमें तुझे मेरे दर्शन नहीं होंगे।"

बाबा चुपचाप कहानी सुनते चल रहे थे। बोले, "भैया, यह तो बड़ा बुरा हुआ।"

पंडे ने कहा, "बाबा, कोई छोटा हो या बड़ा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घमंड किसीको नहीं करना चाहिए। इसके बाद नील-माधव की मूरती वहांसे गायब होगई। राजा बड़ा निराश हुआ। उससे भगवान को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या की। तब एक दिन आकाशवाणी हुई, 'मैं तेरी तपस्या से प्रसन्न हूं। तू किसी दिन विष्णु के दर्शन करेगा, लेकिन मूरती के रूप में नहीं, काठ के रूप में।'

"राजा इन्द्रद्युम्न दर्शनों की आशा में वहीं नीलाचल पर बस गया। अचानक एक रोज वह देखता क्या है कि समुद्र में एक बहुत बड़ा काठ बहा आ रहा है। राजा ने उसे निकलवाकर उसकी विष्णुमूर्ति बनवाने का निश्चय किया। उसी समय बूढ़े बढ़ई के रूप में विश्वकर्मा प्रकट हुए। वह मूरती बनाने के लिए राज़ी होगये, लेकिन उन्होंने एक शर्त्त रक्खी और वह यह कि जिस घर में वह मूरती बनावेंगे उसका दरवाजा जबतक वह कहें नहीं तबतक खोला न जाय।

"इसके बाद काठ को लेकर वह गुंडीचा-मंदिर के स्थान पर एक भवन में बंद होगये। काफी दिन निकल गये। एक दिन महारानी ने राजा से कहा, 'स्वामी, वह बूढ़ा भूख-प्यास से मर गया होगा। ज़रा दरवाजा खोल-कर उसकी हालत देख लेनी चाहिए।' राजा ने रानी की बात मानकर द्वार खुलवाया। बढ़ई वहां नहीं था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जगन्नाथ, सुभद्रा और बलराम की अधूरी मूर्तियां थीं। राजा को यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि वे मूर्तियां पूरी न हो सकीं। उसी समय आकाशवाणी हुई—हे राजन, आप चिंता न करें, हम इसी रूप में रहना चाहते हैं।

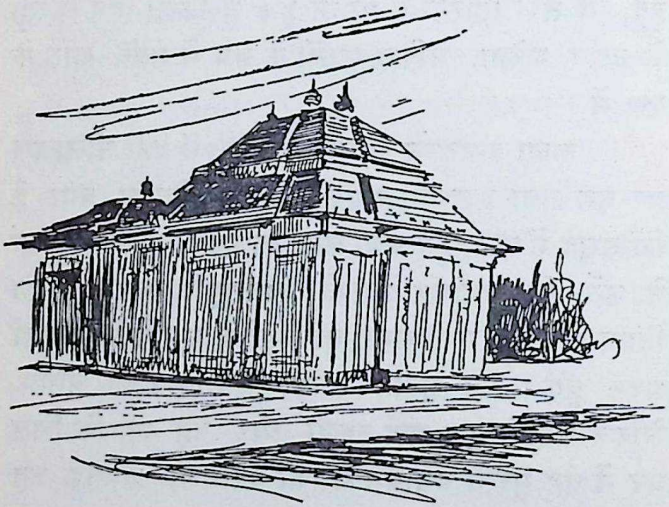

गुंडीचा-मंदिर

मूर्तियों पर रंग-रोगन कराके मंदिर में प्रतिष्ठित करा दो। मूर्तियां गुंडीचा-मंदिर के पास बनाई गईं थीं—इसीलिए गुंडीचा-मंदिर को ब्रह्म-लोक या जनकपुर कहते हैं। यह है जगन्जाथजी की कहानी।"

बाबा ने कहा, "यह तो तुमने बड़ी अच्छी कहानी सुनाई।" इतने में मंदिर आ गया। पंडे ने कहा, "यही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यहांका सबसे बड़ा मंदिर है। यह दो परकोटों के भीतर है और इसके चारों ओर चार बड़े-बड़े द्वार हैं।"

जिस द्वार से वे लोग मंदिर में घुस रहे थे, उसके सामने एक ऊंचा स्तंभ देखकर सुबोध ने पूछा, "महाराज, यह क्या है ?"

पंडे ने बताया, "यह अरुण-स्तंभ है, जो कोणार्क से लाकर यहां स्थापित किया गया है।"

सिंहद्वार से प्रवेश करके तीनों जने पहले परकोटे में पहुंचे। द्वार से ही उन्हें जगन्नाथजी की छबि दिखाई दी। पंडे ने कहा, "जो लोग मंदिर में नहीं जा सकते, वे यहीं से जगन्नाथजी के दर्शन कर लेते हैं।"

आगे उन्हें एक छोटा-सा मंदिर दिखाई दिया। पंडे ने कहा, "इसमें विश्वनाथ-लिंग है। इसकी कहानी है कि एक ब्राह्मण काशी जाना चाहता था। जगन्नाथजी ने सपने में उससे कहा कि इस लिंग की पूजा करे। उसे विश्वनाथ के पूजन का फल मिल जायगा।"

इसके बाद उन्हें पच्चीस सीढ़ियां चढ़नी पड़ीं। पंडा महाराज ने कहा, "ये सीढ़ियां प्रकृति के पच्चीस विभागों की सूचक मानी जाती हैं।

दूसरे परकोटे के दरवाजे में घुसने से पहले दोनों ओर को बाजार-सा लगा था। बाबा ने उसकी ओर इशारा करते हुए पूछा, "यह क्या है, महाराजजी ?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पंडे ने उत्तर दिया, "ये भगवान के प्रसाद की दुकानें हैं। इनपर उबला चावल मिलता है।"

अब वे दूसरे परकोटे के भीतर आये।

बाबा का रोम-रोम पुलक रहा था। कितना विशाल था वह मंदिर! कितना सुंदर। नीचे से ऊपर शिखर तक देखकर ऐसा लगता था कि देखते ही रहो! बाबा उसे निगाह गड़ाकर देख रहे थे, तभी पंडे ने तीन स्थान दिखाये। उनमें पहला अजाननाथ गणेश का था, दूसरा बटेरा महादेव का और तीसरा पटमंगलादेवी का। उनके पास ही सत्यनारायण थे। पंडे ने कहा, "इनकी पूजा सारे धरमों के लोग करते हैं।"

थोड़ा आगे एक वटवृक्ष मिला, जिसे कल्पद्रुम कहते हैं। तीनों ने उसकी परिक्रमा की और उसके नीचे बालमुकुंद के दर्शन किये। फिर सिद्धगणेश-मंदिर देखा। उसके पास ही सर्वमंगला तथा दूसरी देवियों के मंदिर हैं।

इस परकोटे के भीतर और भी कई स्थान हैं। जगन्नाथजी के निज मंदिर के सामने मुक्ति-मंडप है, जिसे ब्रह्मासन कहते हैं। पंडे ने बताया, "किसी समय में यज्ञ के प्रधान आचार्य बनकर स्वयं ब्रह्मा यहां बैठे थे। पर अब विद्वान ब्राह्मण बैठते हैं।"

मुक्तिमण्डप के पीछे मुक्तनृसिंह का मंदिर है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसके पास रोहिणी-कुण्ड और विमलादेवी का मंदिर है। यह यहां का शक्तिपीठ है।

आगे सरस्वती तथा लक्ष्मी के मंदिर हैं, जिनके बीच नील-माधव का मंदिर है। उन्हींके निकट जगन्नाथ-जी का एक छोटा-सा मंदिर है। उसके पास भुवनेश्वरी देवी का। पंडे ने कहा, "इन देवी की पूजा इस प्रदेश के शाक्त लोग किया करते हैं।"

थोड़ा आगे बढ़ते ही एक मंदिर में लक्ष्मी, शंकराचार्य तथा लक्ष्मी-नारायण की मूर्तियां हैं। इस मंदिर के जगमोहन में कथा होती है और शास्त्र पढ़े जाते हैं।

पंडे ने कहा, "मैं एक बात बताना भूल गया।

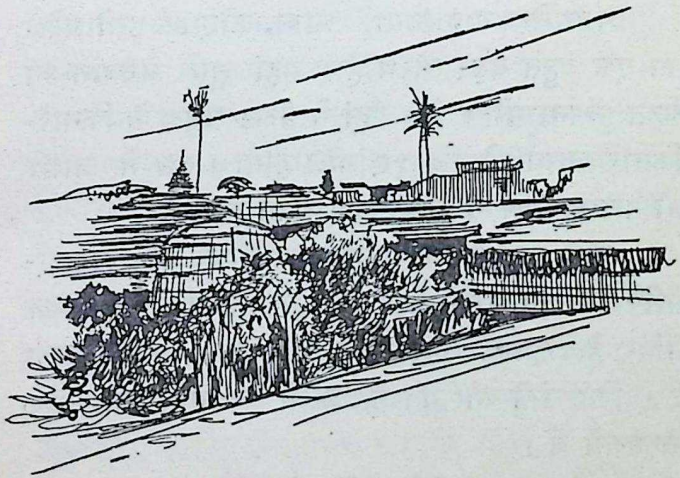

आद्य शंकराचार्य का गोवर्धन-मठ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हमारे देश में सैकड़ों साल पहले एक ऋषि हुए थे। उनका नाम था शंकराचार्य। उन्होंने देश के चारों कोनों पर चार मठ बनाये। एक मठ यहां भी बनाया, जो गोवर्धन-मठ कहलाता है। इसीलिए यहां मंदिर में शंकराचार्य की मूर्ति है।"

लक्ष्मीजी के मंदिर के पास ही सूर्य-मंदिर है। उसमें सूर्य, चंद्र और इंद्र की छोटी-छोटी मूर्तियां हैं। उन्हें दिखाते हुए पंडे ने कहा, "कोणार्क के मंदिर से सूर्य की मूर्ति लाकर यहीं छिपाकर रक्खी गई है।"

बाबा ने कहा, "महाराज, कोनारक का नाम तुमने पहले भी लिया था। यह क्या है ?"

पंडा ने जबाव दिया, "बाबा, कोणार्क इसी प्रदेश का एक बहुत बड़ा तीरथ है। यहां सूर्य भगवान का बहुत पुराना मंदिर है। यहां से पैदल समुद्र के किनारे-किनारे जाओ तो १८-१९ मील होगा। बस से जाओ तो पचास मील से कुछ ऊपर पड़ता है।"

आगे पातालेश्वर महादेव का मंदिर और उत्तरा-मणि देवी की मूरती है। उनके पास ही ईशानेश्वर का मंदिर है। इनको जगन्नाथजी का मामा कहा जाता । फिर नंदी की मूर्ति है, जिससे 'गुप्तगंगा' की धारा निकलती है।

यहां एक द्वार के सामने खड़े होकर पंडा ने कहा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"लो बाबा, अब हम जगन्नाथजी के निज मंदिर के सामने आ गये। इस द्वार को वैकुण्ठ-द्वारा कहते हैं। इसके पास वैकुण्ठेश्वर का मंदिर है।"

वहां एक छोटा-सा बगीचा देखकर बाबा ने कहा, "वाह! मंदिर के भीतर कैसी हरियाली करली है!"

जय-विजयद्वार में जय-विजय की मूर्तियां हैं। पंडे ने कहा, "इनके दर्शन करके और इनकी आज्ञा लेकर यात्री भीतर जाते हैं।" इस द्वार के पास जगन्नाथजी का भण्डार-घर है।

बाबा ने गद्‌गद् होकर मंदिर में प्रवेश किया। सब-से पहले वे जगमोहन में पहुंचे। वहां उन्हें गरुड़-स्तंभ मिला। पंडा ने बताया कि चैतन्य महाप्रभु यहीं से जगन्नाथजी के दर्शन करते थे।

अब वे सोलह फुट ऊंची और चार फुट चौड़ी वेदी के सामने खड़े थे। बाबा और सुबोध की आंखें थोड़ी देर के लिए बंद होगईं, जैसे भीतर की आंखों से वे देख रहे थे। पंडे ने थोड़ी देर चुप रहकर कहा, "यह जो सामने आप तीन मूर्तियां देखते हैं, ये जगन्नाथजी, सुभद्रा तथा बलरामजी हैं, जिनकी चर्चा मैंने कहानी सुनाते हुए की थी। श्यामवर्ण सूरती जगन्नाथजी की है, बीच में सुभद्रा हैं और इधर बलराम।"

बाबा ने मंदिर में घुसते ही हाथ जोड़े थे, सो अब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तक जुड़े थे। सुबोध ने भी हाथ जोड़े और मूर्तियों को सिर झुकाकर प्रणाम किया।

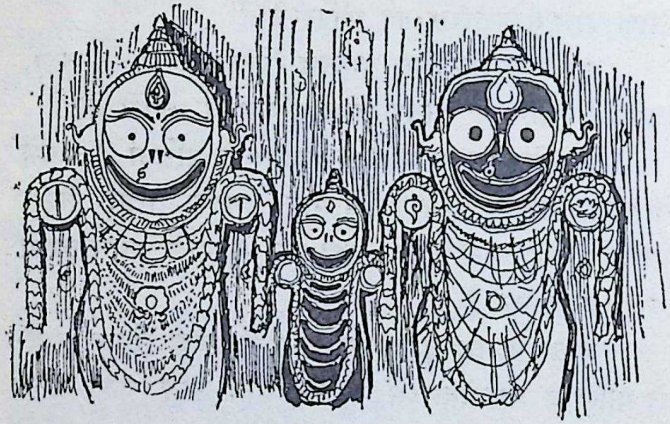

श्री बलभद्र श्री सुभद्रा श्री जगन्नाथ

पंडा ने कहा, "वेदी पर का यह छः फुट लम्बा चक्र सुदर्शन-चक्र है। उसके पास छोटी-छोटी मूर्तियां नील-माधव, लक्ष्मी और सरस्वती की हैं।"

बाबा ने कहा, "तुमने कहानी में सुनाया था कि बूढ़ा बढ़ई गायब होगया था और मूर्तियां अधूरी रह गई थीं। यही वे मूर्तियां हैं क्या ?"

पंडा ने जवाब दिया, "हां, बाबा, आपने ठीक कहा। ये वही मूर्तियां हैं। इनके हाथ पूरे नहीं हैं और मुखमंडल भी अधूरा है।"

वेदी के तीन ओर परिक्रमा करने के लिए तीन-तीन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फुट चौड़ी जगह थी। उन तीनों ने परिक्रमा की। काफी भीड़ थी। बहुत देर रुकना मुश्किल था। पंडा महाराज ने जल्दी-जल्दी कुछ मंत्र पढ़े और फिर तीनों जने सिर नवाकर धीरे-धीरे बाहर चले आये।

: ४ :

बाहर आकर बाबा ने मुड़कर एक निगाह मंदिर पर डाली तो ठिठककर रह गये। यह क्या? उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने आंखें मलीं। फिर देखा। मंदिर पर बड़ी-छोटी, कई नंगी मूर्तियां थीं, नंगी ही नहीं, ऐसी कि जिन्हें देखने में शरम आये। बाबा ने पंडा की ओर देखा। बोले, "इतने बड़े तीरथ में यह क्या है, भैया? यहां तो हजारों-लाखों मर्द-औरतें और बच्चे आते हैं। श्रद्धा-भक्ति की जगह है। ऐसा गजब किसने किया है यहां?"

पंडा ने कहा, "बाबा, यह नहीं कहा जा सकता कि ये मूर्तियां किसने और कब बनवाईं, लेकिन ये बहुत दिनों से हैं। यहां ही नहीं, और भी बहुत-सी जगहों पर हैं। कोणार्क के मंदिर में भी ऐसी सैकड़ों नहीं, हजारों मूर्तियां हैं। अग्निपुराण और बृहतसंहिता में लिखा है कि ये मूर्तियां मंदिर को बिजली, तूफान आदि से बचाने के लिए बनाई गई थीं। बहुत-से विद्वान भी यही बात कहते हैं। बच्चों को नजर लगने से बचाने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के लिए माताएं उनके माथे पर दिठौना लगा देती हैं न ! ऐसा ही कुछ यह किया गया है।"

बाबा और सुबोध ने उनकी बात सुन तो ली, पर जंची नहीं। सुबोध ने कहा, "ऐसा मालूम होता है कि जिन कलाकारों ने यह सुन्दर मंदिर बनाया है, वे यह दिखाना चाहते थे कि आदमी की जिन्दगी में सब तरह की चीजें होती हैं। भक्ति है तो वासना भी है।"

बाबा बोले, "सो तो ठीक है, पर बेटा, धरम से बढ़कर इस दुनिया में कोई चीज नहीं है। आदमी आता है और चला जाता है, पर धरम हमेशा रहता है।"

सुबोध कुछ कहना चाहता था कि पंडा ने बात बदल दी। बोला, "बाबा, जरा मंदिर की बनावट को तो देखो। नीचे से ऊपर तक कैसी कारीगरी की चीज बनाई है ! यह कोई मामूली बात नहीं है।"

पर बाबा को रह-रहकर उन मूर्तियों का ही विचार आ रहा था। उन्होंने कहा, "क्यों भैया, इन मूर्तियों को यहां से हटवा क्यों नहीं देते ?"

पंडा बोला, "एक बार ये सब मूर्तियां मिट्टी भरवाकर बंद करादी गई थी; लेकिन कुछ लोगों ने बड़ा शोर मचाया, तूफान खड़ा किया और जबतक ये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मूर्तियां खोल नहीं दी गईं, तबतक उन्होंने चैन नहीं लिया।"

बात करते-करते वे लोग मंदिर के बाहर आ गये। पंडा ने कहा, "अब मैं जाऊंगा। आप लोग बस्ती में घूमलें। बाजार देख लें। अभी यहां और बहुत-से मंदिर हैं। आस-पास कई तीरथ हैं, उन्हें हम कल देखेंगे।"

इतना कहकर पंडा चला गया। बाबा और सुबोध बाजार में पहुंचे। वहां एक दुकान पर खाना खाया। फिर बाजार में घूमते रहे। पंडा बता गया था कि यहां सींग की और चांदी के तारों की बहुत बढ़िया चीजें बनती हैं। दोनों कई दुकानों पर गये और चीजों की कारीगरी देखकर बड़े खुश हुए।

: ५ :

सुबोध बाजार से एक किताब खरीद लाया था। धरमशाला में लौटकर उसने उसे पढ़ा और बाबा से बोला, "बाबा, हमारे पुराणों में इस जगह की बड़ी महिमा बताई गई है। इसके कई नाम हैं। पुरी, नीलाचल, पुरुषोत्तम, श्रीक्षेत्र, शंखक्षेत्र आदि-आदि। अंग्रेजों के जमाने में इसे जगन्नाथपुरी कहते थे और यहां के कलक्टर जगन्नाथ के कलक्टर कहलाते थे। स्कन्दपुराण के उत्कल खण्ड में इसका नाम पुरुषोत्तम-क्षेत्र दिया हुआ है। उसमें लिखा है कि बहुत-से देवताओं को बिठलाकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नैमिषारण्य में विष्णु भगवान ने इस जगह की महिमा का बखान किया था।"

बाबा ने पूछा, "क्यों भैया, उस समय भी यह जगह ऐसी ही थी क्या ?"

"नहीं बाबा," सुबोध बोला, "इस जगह के भाग्य तो बराबर बदलते रहे हैं। पांचवीं सदी में यहां बौद्धधर्म का जोर हुआ; लेकिन बुद्ध भगवान के कोई हजार बरस बाद फिर हिंदुओं का भाग्य चेत गया। सातवीं सदी तक क्या हुआ, इसका कोई खास पता नहीं चलता। लेकिन केसरी-वंश का खात्मा होने पर जब गंग-वंश के राजा राज करने लगे तो इस स्थान की बड़ी उन्नति हुई। गंग-वंश के राजाओं में अनंत वर्मन बड़ा शक्तिशाली राजा था। उसके बाद अनंग भीमदेव ने जो किया, वह भूला नहीं जा सकता।"

बाबा ने पूछा, "क्या किया था उसने, भैया ?"

सुबोध बोला, "बाबा, उसके हाथों एक ब्राह्मण की हत्या होगई थी। उसका प्रायश्चित करने के लिए उसने बहुत-से मंदिर बनवाये। जगन्नाथजी का यह मंदिर भी उसीके राज में बना। सन् ११९८ में यह पूरा हुआ। पिछले दिनों एक ताम्रपत्र मिला है, जो मंदिर की प्रतिष्ठा में भाग लेनेवाले एक ब्राह्मण को दिया गया था। उसपर जो तारीख दी गई है, उससे मंदिर के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बनने की तारीख पक्की होती है।

"बाद के सालों में कई मुसलमान बादशाहों ने इस मंदिर पर हमले किये। पर उनकी जड़ नहीं जम सकी। फिर जब मराठों का राज हुआ तो उन्होंने इसके लिए कुछ आमदनी बांध दी। अंग्रेजों के जमाने में मंदिर के मामले में किसी तरह का दखल न देने की नीति रक्खी गई; लेकिन सरकार की यह इच्छा रही कि उसका प्रबंध अपने हाथ में रखे। इसके लिए मुकद्दमेबाजी हुई, पर अंत में समझौता होगया और यहां के प्रबंध की जिम्मेदारी गैर-सरकारी लोगों के हाथों में रही। इस तरह यहां बराबर उतार-चढ़ाव आते रहे हैं। पर बाबा, यह सब होते हुए भी धार्मिक लोगों का आना-जाना कभी नहीं रुका, उन दिनों भी नहीं, जबकि रेल या मोटर का आज जैसा सुभीता नहीं था और अब तो हर साल लाखों यात्री यहां आते हैं।"

: ६ :

अगले दिन सबेरे ही पंडा आगया। वह पहले तो उन्हें जगन्नाथजी के मंदिर में ले गया। वहां दर्शन और पूजा करके वे दूसरे तीर्थों को देखने चले। बड़े मंदिर के सामने रास्ते पर कोई मील-डेढ़ मील चलने पर वे गुंडीचा-मंदिर पहुंचे। रास्ते में मार्कण्डेय-सरोवर, उसके पास मार्कण्डेश्वर का मंदिर और चंदन तालाब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भी देख लिये। गुंडीचा-मंदिर पर जाकर पंडा ने कहा, "इस जगह का हाल में आपको पहले ही सुना चुका हूं। यहींपर विश्वकर्मा ने जगन्नाथजी आदि की मूत्तियां बनाई थीं। अब इस मंदिर में रथ-यात्रा के समय जगन्नाथजी विराजमान होते हैं। बाकी समय में कोई मूरती नही रहती।"

मंदिर के उत्तर-पूरब में इन्द्रद्युम्न-सरोवर है। पंडा ने बताया कि यह सरोवर उन राजा के नाम पर है, जिन्होंने विश्वकर्मा से मूर्तियां बनवाई थीं।

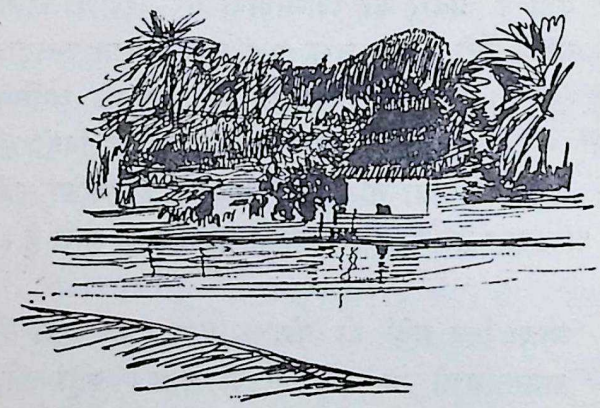

इंद्रद्युम्न-सरोवर

जगन्नाथजी के मंदिर के दक्खिन-पच्छिम में कपाल-मोचन तीर्थ देखते हुए वे एमारमठ पहुंचे, जो जगन्नाथ के मंदिर के बड़े द्वार के सामने है। पंडा ने कहा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"शंकराचार्य की तरह एक और बड़े संत हमारे देश में हुए हैं। उनका नाम था रामानुजाचार्य। उनका एक नाम 'एम्बाडीयम्' था। इसी नाम पर इस मठ का नाम पड़ा है। रामानुज यहां आये थे और कुछ दिन इसी जगह पर रहे थे।"

वहां से तीनों की टोली गंभीरा-मठ पहुंची। यह मठ बड़े मंदिर से स्वर्गद्वार, यानी समुद्र जानेवाले रास्ते पर एक गली में पड़ता है। चैतन्य महाप्रभु यहां अठारह

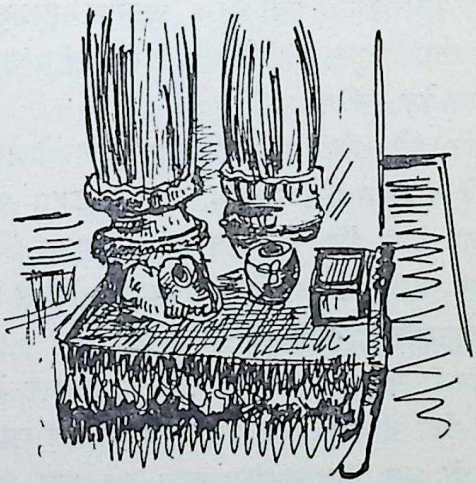

गंभीरा मठ में श्री चैतन्य के खड़ाऊ, कमण्डलु और गुदड़ी

साल रहे थे। पहले यह काशी मिश्र का भवन था। चैतन्य के रहने पर गंभीरा-मठ कहा जाने लगा। और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अब उसे राधाकांत-मठ कहते हैं। उसमें घुसते ही राधा-कांत-मंदिर है, जिसमें राधा-कृष्ण की बड़ी सुंदर मूर्तियां हैं। अंदर जाकर गंभीरा-मंदिर है। वह कोठरी भी है, जिसमें चैतन्य महाप्रभु अठारह साल रहे थे। उनका चित्र, चरणपादुका, कमण्डलु, गुदड़ी, माला आदि देखकर बाबा का दिलभर आया। बोले, "संतों की जगह की कितनी महिमा होती है!"

कुछ आगे ले जाकर पंडा ने कहा, "यह सिद्धबकुल है। यहां पहले छाया नहीं थी। चैतन्य महाप्रभु ने यह देखकर यहां बकुल (मौलिश्री) की दातौन गाड़ दी। उसीसे यह पेड़ बन गया।"

फिर श्वेत-गंगा-सरोवर और श्वेत-केशव-मंदिर देखकर वे गोवर्धन-पीठ पहुंचे। पंडा ने कहा, "आपको मैंने बताया था कि शंकराचार्य ने भारत के चार छोरों पर चार मठ बनाये थे। यह उन्हींमें से एक है। देखिये, वह मूर्त्ति शंकराचार्य की है।"

फिर वे समुद्र की ओर बढ़े। स्वर्गद्वार के पास पहुंचकर पंडा ने कहा, "तीरथ संतों को बड़े प्यारे होते हैं। देखिये, यह पाताल-गंगा नाम का कूप है। यहां आकर कुछ दिन कबीर रहे थे।"

"कबीर!" बाबा जैसे चौंक पड़े। बोले, "बड़े ऊंचे दरजे के संत थे वह। उन्होंने ही तो कहा था—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।
जो दिल खोजा अपना, मुझसा बुरा न कोय॥

वाह ! क्या बढ़िया बात कही थी उन्होंने !"

दाहिनी ओर आध मील पर हरिदास की समाधि दिखाते हुए पंडा ने कहा, "बाबा, यह वह जगह है, जहां चैतन्य महाप्रभु ने स्वामी हरिदास के शरीर को समाधि दी थी।"

फिर वे तीनों मीलभर चलकर तोटा गोपीनाथ पहुंचे। पंडा ने कहा, "यह जो रेत का टीला है, इसे चटकगिरि कहते हैं। इसीमें चैतन्य महाप्रभु को गिरि-राज गोवर्धन के और समुद्र में कालिंदी के दर्शन हुए थे। इस गिरि की रेती में ही चैतन्य को गोपीनाथ की मूर्ति मिली थी। इस मूर्ति की बड़ी रोचक कहानी है।"

उत्सुकता से बाबा ने पूछा, "क्या ?"

पंडा ने कहा, "कहते हैं, यह मूर्ति पहले खड़ी थी। वह इतनी ऊंची थी कि उसके सिर पर पाग नहीं बांधी जा सकती थी। इससे पूजा करनेवालों को बड़ा दुःख होता था। यह देखकर गोपीनाथजी बैठ गये। भक्तों का कहना है कि चैतन्य महाप्रभु इसी मूर्ति में लीन हो गये। मूर्त्ति में सोने की रेखा दिखाई देती है, वही चैतन्य के लीन होने की निशानी बताई जाती है।"

वहां से आध मील पर लोकनाथ महादेव का मंदिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और उसके पास शिवगंगा-सरोवर देखते हुए वे माधवेंद्रपुरी के कूप पर पहुंचे। पंडे ने कहा, "इस जगह ही श्री माधवेंद्र पुरी तथा चैतन्य महाप्रभु का सत्संग हुआ था।"

रेल के स्टेशन से कोई आध मील पर उन्होंने हनुमानजी के मंदिर के दर्शन किये। हनुमान के पैरों में बेड़ियां पड़ी हुई थीं। उनकी ओर इशारा करते हुए पंडे ने कहा "जानते हैं, ये बेड़ियां क्यों डाली गई हैं?"

बाबा ने उत्तर दिया, "नहीं।"

पंडे ने कहा, "कहते हैं कि समुद्र पुरी के भीतर न बढ़ आये, इसलिए भगवान ने हनुमान को यहां नियुक्त किया था। लेकिन एक बार हनुमानजी रामनौमी का उत्सव देखने अयोध्या चले गये। इसपर भगवान ने उनके पैरों में बेड़ियां डाल दी, जिससे वह फिर कहीं न जा सकें।"

बेड़ी-हनुमान-मंदिर के सामने ही समुद्र के किनारे पर चक्रनारायण का मंदिर है। कुछ सीढ़ियां चढ़कर भगवान के दर्शन होते हैं। यह मंदिर पुराना लगता है, अब टूट-फूट रहा है। वहीं समुद्र के किनारे चक्र-तीर्थ है। पंडे ने कहा, "जगन्नाथ की कहानी सुनाते समय मैंने आपको बताया था कि एक बड़ा काठ समुद्र में बहकर आया था और उसे निकलवाकर राजा इंद्र-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्युम्न ने जगन्नाथजी की मूर्त्ति बनवाई थी। यह वही जगह है, जहां वह काठ किनारे आकर लगा था।"

बेड़ी-हनुमान-मंदिर के पास ही सोनार गौरांग है। इस मंदिर में चैतन्य महाप्रभु की सोने की बड़ी सुंदर मूर्त्ति है।

जगन्नाथजी के मंदिर से कोई आधा मील की दूरी पर हनुमानजी का मंदिर है। पंडे ने कहा, "बाबा, छोटे-बड़े हर तीरथ की कोई-न-कोई कहानी है। कहते हैं, समुद्र की गर्जन से सुभद्रा की नींद भंग होती थी। इसलिए भगवान ने यहां हनुमानजी को नियुक्त किया कि कान लगाकर सुनते रहो कि यहांतक समुद्र की आवाज़ तो नहीं आती है।"

इसके बाद उन्होंने और कई स्थान देखे। फिर वे महाप्रभु की बैठक पर पहुंचे। पंडे ने कहा, "बाबा, यहां स्वामी वल्लभाचार्य आये थे।" इसके उपरांत उन्होंने नानक-मठ देखा। वहां गुरु नानक पधारे थे।

पुरी धाम के छोटे-बड़े सब तीरथ, मंदिर, मठ आदि देखकर बाबा को बहुत आनंद हुआ। सुबोध को भी बड़ा अच्छा लगा। वे तीन दिन वहां रहे। रोज समुद्र में स्नान करते, बड़े मंदिर में दर्शन और पूजन करते और दिन में वहां के तीरथ और मंदिर देखते। समय योंही निकल गया। पंडे ने बताया था कि पुरी से कुछ मील के घेरे में और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कई बड़े-बड़े तीरथ हैं, लेकिन सुबोध को जल्दी लौटना था। इसलिए उनके दर्शन का लोभ छोड़कर वे चले आये।

रास्ते में बाबा ने कहा, "बेटा, हमारे बड़े भाग हैं, जो हमारे देश में ऐसे-ऐसे तीरथ हैं।"

और सुबोध ने देखा, बाबा की आंखें गहरी भावना और उल्लास से चमक रही हैं। उसने अनुभव किया, उसकी यात्रा सफल होगई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'मंडल' द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

आत्मकथा (गांधीजी)	५·००	गांधीजी को श्रद्धांजलि ,,	०·३७
प्रार्थना-प्रवचन २ भाग ,,	५·५०	भूदान-यज्ञ (विनोबा)	०·२५
गीता-माता ,,	४·००	राजघाट की संनिधि में	०·७२
पंद्रह अगस्त के बाद ,,	२·००	विचार-पोथी ,,	१·००
धर्मनीति ,,	२·००	सर्वोदय का घोषणा-पत्र,,	०·२५
द० अफ्रीका का सत्याग्रह	३·५०	मेरी कहानी (नेहरू)	८·००
मेरे समकालीन ,,	५·००	,, संक्षिप्त ,,	२·५०
आत्म-संयम ,,	३·००	हिन्दुस्तान की समस्याएं,,	२·००
गीता-बोध ,,	०·५०	राष्ट्रपिता ,,	२·००
अनासक्तियोग ,,	१·५०	राजनीति से दूर ,,	२·००
ग्राम-सेवा ,,	०·३७	हमारी समस्याएं (१ भाग)	०·७५
मंगल-प्रभात ,,	०·३७	विश्व-इतिहास की झलक	२१·००
सर्वोदय ,,	०·३७	सं० हिन्दुस्तान की कहानी	५·००
नीति-धर्म ,,	०·३७	नया भारत ,,	०·२५
आश्रमवासियों से ,,	०·३७	आजादी के दस साल ,,	०·२५
हमारी मांग ,,	१·००	गांधीजी की देन (राजेंद्रप्रसाद)	१·५०
सत्यवीर की कथा ,,	०·२५	गांधी-मार्ग ,,	०·१२
संक्षिप्त आत्मकथा ,,	१·५०	महाभारत-कथा (राजाजी)	५·००
हिंद-स्वराज्य ,,	०·७५	कुब्जा-सुन्दरी ,,	२·००
अनीति की राह पर ,,	१·००	शिशु-पालन ,,	०·५०
बापू की सीख ,,	०·५०	मैं भूल नहीं सकता ,,	२·५०
गांधी-शिक्षा (तीन भाग),,	१·१२	कारावास-कहानी (सु. नै.)	१०·००
आज का विचार (दो भाग)	०·७५	गांधी की कहानी (लु. फि.)	४·००
ब्रह्मचर्य (दो भाग) ,,	१·७५	भारत-विभाजन की कहानी	४·००
गांधीजी ने कहा था (६ भाग) प्रत्येक	०·३०	बापू के चरणों में	२.५०
शान्ति-यात्रा (विनोबा)	१·५०	इंग्लैंड में गांधीजी	२·००
विनोबा के विचार : २ भाग	३·००	बा, बापू और भाई	०·५०
गीता-प्रवचन ,,	१·५०	गांधी-विचार-दोहन	१·५०
जीवन और शिक्षण ,,	२·००	सर्वोदय-तत्व-दर्शन	७·००
स्थितप्रज्ञ-दर्शन ,,	१·००	सत्याग्रह-मीमांसा	३·५०
ईशावास्यवृत्ति ,,	०·७५	बुद्ध-वाणी (वियोगी हरि)	१·००
ईशावास्योपनिषद् ,,	०·१२	सन्त-सुधासार ,,	११·००
सर्वोदय-विचार ,,	१·१२	श्रद्धाकण ,,	१·००
स्वराज्य-शास्त्र ,,	५·००	अयोध्याकाण्ड ,,	१·००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भागवत-धर्म (ह० उ०)	६·५०	एक आदर्श महिला	१·००
श्रेया ी जमनालालजी ,,	६·५०	राष्ट्रीय-गीत	०·२५
स्वतन्त्रता की ओर ,,	४.००	तामिल-वेद (तिरुवल्लुवर)	१·५०
बापू के आश्रम में ,,	१·००	आत्म-रहस्य	३·००
मानवता के झरने (मावलंकर)	१·५०	थेरी-गाथाएं	१·५०
बापू (घ० विड़ला)	२·००	बुद्ध और बौद्ध-साधक	१·५०
रूप और स्वरूप ,,	०·६२	जातक-कथा (आनंद का०)	२·५०
डायरी के पन्ने ,,	१·००	हमारे गांव की कहानी	१·५०
ध्रुवोपाख्यान ,,	०·२५	खादी द्वारा ग्राम-विकास	०·७५
स्त्री और पुरुष (टाल्स्टाय)	१·००	साग-भाजी की खेती	३·००
मेरी मुक्ति की कहानी ,,	१·५०	ग्राम-सुधार	१·२५
प्रेम में भगवान ,,	२·००	पशुओं का इलाज	०·५०
जीवन-साधना ,,	१·२५	चारादाना	०·२५
कलवार की करतूत ,,	०·२५	रामतीर्थ-संदेश (३ भाग)	१·१२
हमारे जमाने की गुलामी	०·५	रोटी का सवाल (क्रोपा०)	३·००
बुराई कैसे मिटे ? ,,	१·००	नवयुवकों से दो बातें ,,	०·३७
बालकों का विवेक ,,	०·५०	पुरुषार्थ (डा० भगवानदास)	०·३७
हम करें क्या ? ,,	३·५०	काश्मीर पर हमला	२·००
धर्म और सदाचार ,,	१·२५	शिष्टाचार	०·५०
अंधेरे में उजाला ,,	१·७५	तट के बंधन	२·००
ईसा की सिखावन ,,	१·००	भारतीय संस्कृति	३·५०
कल्पवृक्ष (वा० अग्रवाल)	२·००	आधुनिक भारत	५·००
लोक-जीवन (कालेलकर)	३·५०	फलों की खेती	२·५०
साहित्य और जीवन ,,	२·००	मैं तन्दुरुस्त हूं या बीमार	०·५०
कब्ज (म० प्र० पोद्दार)	१·००	भा० नवजागरण का इतिहास	३·००
हिमालय की गोद में ,,	२·००	गांधीजी की छत्रछाया में	१·५०, २·५०
कहावतों की कहानियां ,,	२·००	भागवत्-कथा	३·५०
राजनीति-प्रवेशिका	१·००	जय अमरनाथ	१·५०
जीवन-संदेश (ख० जिब्रान)	१·२५	हमारी लोककथाएं	१·५०
अशोक के फूल	३·००	संस्कृत-साहित्य-सौरभ	
जीवन-प्रभात	५·००	(३४ पुस्तकें) प्रत्येक	०·३७
कां० का इतिहास (३ भाग)	३०·००	समाज-विकास-माला	
पंचदशी	१·५०	(१३० पुस्तकें) प्रत्येक	०·३७
सप्तदशी	२·००	कृषि-ज्ञान-कोष	४·००
रीढ़ की हड्डी	१·५०	प्रकाश की बातें	१·५०
अमिट रेखाएं	३·००	धरती और आकाश	१·२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिबि और दधीचि
५. जिनीना और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-स्मरण-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-मैया क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कर्बला का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हातिम-ग्रल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर-जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी : भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी : भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. सूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की कहानी
७६. सोने का कंगन
७७. झांसी की रानी
७८. हुमा तवेरा
७९. वीरबल की बातें
८०. मन के जीते जीत
८१. मुरब्बी
८२. हरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. ज्ञानवान के रत्न
८५. महामना मालवी
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्यारा
८८. देश यों आगे बढ़ेगा
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. नन्हा अमावोल
९१. स्वामी विवेकानंद
९२. आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत बेमन्ना
९६. आराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि अगस्त्य
१००. दानवीर कर्ण
१०१. शेख सादी
१०२. गोदावरी
१०३. कुम्हार की बेटी
१०४. नर्मदा
१०५. शंकराचार्य
१०६. अमरनाथ
१०७. महारानी अहिल्याबाई
१०८. पढ़ेंगे-लिखेंगे...
१०९. कोणार्क
११०. मंगू भंगी

मूल्य : प्रत्येक का [illegible] ४० नये पैसे

११५

सस्ता साहित्य मण्डल

४० [illegible] संतीस नये पैसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu